Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

भारत–अमेरिका संबंध शीत–युद्ध के बाद सहयोग और विवाद का क्षेत्र

अहमद हुसैन आरजू
शोधार्थी,राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय,पटना
Email: aarzooias786@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171123
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 132-135
November. 2025

सारांश

शीतयुद्ध के बाद भारत–अमेरिका संबंधों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। 1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में कदम रखा, जिससे दोनों देशों के आर्थिक और व्यापारिक संबंध मजबूत हुए। 2005 में हुए सिविल न्यूक्लियर डील ने रणनीतिक साझेदारी को नई ऊँचाई दी। रक्षा सहयोग में QUAD और इंडो–पैसिफिक रणनीति जैसे पहलुओं ने दोनों देशों को करीब लाया। तनीकी क्षेत्र, विशेषकर आईटी और स्टार्टअप्स, में भी सहयोग बढ़ा।

हालांकि, कुछ विवाद भी बने रहे। भारत के रूस के साथ घनिष्ठ संबंध और अमेरिका की पाकिस्तान को दी जाने वाली सहायता, जैसे मुद्दें विवाद का कारण बने। वीज़ा और आव्रजन नीतियों पर भी असहमति देखी गई। इसके अलावा, भारत की गैर–पश्चिमी विदेश नीति और अमेरिका का मानवाधिकारों पर ध्यान कभी–कभी तनाव पैदा करते हैं।कुल मिलाकर, शीतयुद्ध के बाद भारत–अमेरिका संबंधों में सहयोग के क्षेत्र व्यापक हुए हैं, लेकिन रणनीति और वैचारिक मतभेद कभी–कभी इन प्रभाव डालते हैं।

Keywors: *भारत–अमेरिका संबंध, शीतयुद्ध, आर्थिक उदारीकरण, सिविल न्युक्लियर डील, QUAD, रक्षा सहयोग, पाकिस्तान–अमेरिका संबंध, रूस–भारत संबंध, वीज़ा विवाद, इंडो–पैसिफिक रणनीति, तकनीकी सहयोग, आव्रजन नीति।*

Submitted: 18 Oct. 2025
Revised: 28 Oct. 2025
Accepted: 11 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

प्रस्तावना

भारत और अमेरिका विश्व के दो सबसे बड़े लेकतांत्रिक देश होने के बावजूद दोनों देशों के सम्बन्धों की जड़ें ऐतिहासिक रूप से गहरी नहीं रही है। फिर भी यदि हम दोनों देशों के बीच के सम्बन्धों का अवलोकन करे तो पता चलता है कि भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच सामरिक, आर्थिक और संस्कृति सम्बन्ध धीरे–धीरे अवश्य विकसित हुए हैं। जिसकी शुरुआत हमें 20वीं शताब्दी में परिलक्षित होता है जब भारत स्वतंत्र संग्राम में संघर्षरत था, तब अमेरिकी समाज और मीडिया में महात्मा गांधीजी और उनके अहिंसक आन्दोलन के प्रति एक गहरी रुचि देखी गई। गांधीजी के सत्याग्रह और नागरिक अधिकारों की नीतियों ने अमेरिका में कई आन्दोलनों, विशेष रूप से मार्टिन लूथर किंग जूनियर के नेतृत्व वाले सिविल राइट्स मूवमेंट को प्रेरित किया। हालाँकि उस दौरान अमेरिकी सरकार ने औपनिवेशिक ब्रिटेन के साथ गठजोड़ के कारण भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का खुला समर्थन नहीं किया।

परन्तु भारत जैसे ही 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ वैसी ही संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा भारत को एक लोकतांत्रिक देश के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। लेकिन उस काल में शीत युद्ध का दौर चल रहा था, जिसने भारत एवं अमेरिका के सम्बन्धों को जटिल बनाए रखा। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसी दौरान युगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज टीटो, इंडोनेशिया के सुकर्णो, मिस्र के गमाल अब्दुल नासिर घाना के क्वामे नक्रूमा के साथ मिलकर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन (Non-Aligned movement-NAM) की स्थापना कर दी। भारत ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का नेतृत्व भी किया साथ ही साथ सोवियत संघ रूस के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध भी बनाए रखा, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका पश्चिमी गुटो का नेतृत्व कर रहा था। इस विभाजन ने दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को सीमित रखा।फिर भी 1950 से 1960 के दशक के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत को आर्थिक एवं खाद्य सहायता प्रदान की परन्तु यह सहयोग बहुत हद तक सीमित ही था। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच सम्बन्धों में तनाव उस दौरान तब बढ़ गया जब 1965 का भारत–पाकिस्तान युद्ध और 1971 के बंग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अमेरिका ने भारत के जगह पाकिस्तान का समर्थन किया।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अहमद हुसैन आरजू, शोधार्थी,राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय,पटना

How to cite this article:
आरजू, . अहमद . हुसैन . (2025). भारत-अमेरिका संबंध शीत-युद्ध के बाद सहयोग और विवाद का क्षेत्र. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 132–135.
https://doi.org/10.5281/zenodo.17877778

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17877778
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

1974 में भारत द्वारा पोखरण में अपने पहले परमाणु परीक्षण (स्माइलिंग बुद्धा) के बाद अमेरिका और भारत के बीच तनाव और बढ़ गया। अमेरिका ने भारत पर कई तरह के प्रतिबंध लगाए। इसके बावजूद भारत द्वारा गुटनिरपेक्ष नीति जारी रखा गया।

1980 के दशक में, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच सम्बन्धों में धीरे–धीरे सुधार होना प्रारंभ हुआ। जिसमें 1985 में एक अहम मोड़ आया जब श्री राजीव गांधीजी देश के प्रधानमंत्री बने। उनके शासनकाल के दौरान तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग की शुरुआत हुई। 1991 में भारत में जब आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई। इसके बाद भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच सम्बन्धों में एक नये युग की शुरुआत हुई। क्योंकि सोवियत संघ के विघटन के साथ ही 45 वर्षों से शीत युद्धि की कड़वाहट भी खत्म हो गई, जिसके कारण सम्बन्ध बेहतर होने लगे। लेकिन 1998 में भारत द्वारा जब फिर से परमाणु परीक्षण किया गया, तब संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा पुनः कई प्रकार से भारत पर प्रतिबंध लगा दिया गया। फिर जल्द ही दोनों देशों (भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका) तार्किक एवं कूटनीतिक बातचीत के जरिए इसे हल कर लिया। भारत के परमाणु परीक्षण के मात्र 2 वर्ष बाद सन् 2000 ईस्वी में संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के द्वारा भारत की यात्रा की जिससे दोनों देशों के सम्बन्धों में एक नया आयाम आया। फिर भी दोनों देशों के बीच कई बार कई मुद्दों पर अलग–अलग दृष्टिकोण होने के आरण विवाद का विषय बन जाता है इसलिए हम दोनों देशों के सम्बन्धों को सहयोग के साथ–साथ विवाद का भी विषय इस आलेख में निम्नांकित रूप से देखेंगे।

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच सहयोग का क्षेत्र :

आर्थिक सहयोग : सन् 1991 में जब भारत के द्वारा आर्थिक सुधारों की घोषणा की गई, उसके बाद भारत सरकार ने अपने बाजारों को उदार बनाया जिसके परिणाम स्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका के कम्पनियों की भारत में निवेश करने और व्यापार बढ़ाने का अवसर मिला। जिसका परिणाम यह हुआ कि 1990 के दशक में जो द्विपक्षीय व्यापार का कुल मूल्य लगभग $5 बिलियन था, जो कि वित्तीय वर्ष 2022–23 में यह व्यापार बढ़कर 128.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया है। इस व्यापार में मुख्य योगदान वस्त्र, फार्मास्यूटिकल्स आइटी (I.T.) सेवाएँ, रक्षा उपकरण, और नवीकरणीय ऊर्जा का क्षेत्र है।

अमेरिकी कम्पनियों ने भारत में भारी निवेश किया है। विशेष रूप से I.T. (आईटी) और ई–कॉमर्स (जैसे Amazon, Google etc.)। भारत की कम्पनियों ने भी जैसे TCS, Infosys और Wipro ने भी संयुक्त राज्य अमेरिका मैं अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। साथ ही साथ दोनों देशों ने तकनीकी और स्टार्टअप के क्षेत्र में भी एक दूसरे के साथ सहयोग किया है जैसे सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A.I) जैसे तकनीक एवं Zomato, Flipkart, Silicon valley, मेक इन इंडिया जैसे स्टार्टअप में भी सहयोग मिला है। साथ ही साथ इंडो–यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम (IUSSTF) के तहत उन्नत शोध और तकनीकी विकास के कई प्रोजेक्ट संचालित किए गए हैं।

सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारी :

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंधों में एक अहम मोड तब आया, जब भारत एवं अमेरिका के बीच सन् 2005 में सिविल न्यूक्लियर डील हुआ। इस सझौते को 123 एग्रीमेंट भी कहा जाता है। इस समझौते का उद्देश्य भारत को ऊर्जा जरूरतों के लिए नागरिक न्यूक्लियर टेक्नोलाजी प्रदान करना था, साथ ही इसे अंतराष्ट्रीय परमणु अप्रसार तंत्र में जोड़ना। इस समझौते का मुख्य प्रावधान –

- भारत को नागरिक और सैन्य परमाणु कार्यक्रमों को अलग करना पड़ा।
- भारत के नागरिक परमाणु संयत्रों को IAEA (अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी) के निरीक्षण में लाना पड़ा।
- भारत को न्यूक्लियर फ्यूल और टेक्नोलॉजी के लिए विशेष NSG (Nuclear Suppliers Group) छूट मिली, जिससे इसे वैश्विक न्यूक्लियर व्यापार में शामिल किया गया।

इस न्यूक्लियर डील की शिवशंकर मेनन ने भारत–अमेरिकी सम्बन्धों में एक मील का पत्थर बताया है। यह डील भारत को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु अप्रसार व्यवस्था में लाने और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की गई थी। अमेरिका ने भारत को NSG से विशेष छूट दिलाई जिससे भारत को वैश्विक स्तर पर नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी तक पहुँच मिली।

QUAD (Quadrilateral Security Dialogue) ने भी दोनों देशों को एक साथ लाने का प्रयास किया है। इस संगठन में भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया शामिल है। इसका मुख्य उद्देश्य एक स्वतंत्र और खुला हिन्द–प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करना है। इसमें समुद्री सुरक्षा, इंफ्रास्ट्रक्चर विकास आपदा प्रबंधन और तकनीकी सहयोग पर जोर दिया गया है। यह गठबंधन क्षेत्रीय स्थिरता और चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत और अमेरिका संयुक्त रूप से दोनों देश आतंकवाद से प्रभावित रहे हैं। यही कारण है कि दोनों देश आतंकवाद से निपटने के लिए खुफिया साझेदारी और सैन्य सहयोग पर काम कर रहे हैं। दोनों देश साइबर सुरक्षा पर भी साथ मिलकर काम कर रहे हैं, जिससे संवेदनशील डेटा और महत्वपूर्ण संरचनाओं को बचाया जा सके। भारत–अमेरिका 2+2 वार्ता के माध्यम से इस क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत किया है। इन साझेदारियों का सामूहिक द्देश्य वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देना है, जिसमें तकनीकी प्रगति और रणनीतिक सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग :

भारत और अमेरिका के बीच वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण ISRO (Indian Space Research Organisation) और NASA (National Aeronautics and Space Administration) के बीच साझेदारी है। यह सहयोग वैज्ञानिक नवाचार अनुसंधान और वैश्विक चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ISRO एवं NASA के विभिन्न परियोजनाओं में मिलकर काम किया है, जिनमें से एक महत्वपूर्ण मिशन 'निसार' (NISAR) है। यह उपग्रह मिशन पृथ्वी के सतह परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं का अध्ययन करने

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

के लिए विकसित किया गया है। निसार जो सिंथेटिक एपर्चर रडार (SAR) तकनीक पर आधारित है, विश्व का पहला ऐसा रडार है जो दो अलग–अलग रडार फ्रीक्वेंसी (L-बैंड और S-बैंड) का उपयोग करता है। यह परियोजना न केवल पृथ्वी की सतह पर हो रहे हैं परिवर्तनों को समझने में मदद करेगी बल्कि आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण में भी सहयोग करेगी। इसके अलावा भारत–अमेरिका के बीच गहरे अंतरिक्ष अन्वेषण (Deep Space Exploration) और मानव अंतरिक्ष उड़ान (Human Space of Light) के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ रहा है। Gaganyaan के तहत ISRO-NASA के विशेषज्ञों ने तकनीकी और सुरक्षा उपायोग के आदान–प्रदान में योगदान दिया है।

Covid-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य प्रणाली और वैज्ञानिक समुदाय को एक साथ लाने की आवश्यकता को उजागर किया। भारत और अमेरिका ने फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में साझेदारी को गहरा करते हुए वैक्सीन उत्पादन, अनुसंधान और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत को "विश्व की फार्मेसी" के रूप में जाना जाता है और Covid-19 वैक्सीन निर्माण में उसकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। भारत की सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया और अमेरिकी फार्मा कम्पनियों जैसे फाइजर और मॉडर्ना के बीच सहयोग ने वैक्सीन उत्पादन को तेजी से बढ़ाया। इसके अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका ने COVAX पहल के तहत वैक्सीन डोज उपलब्ध कराने और वैश्विक वितरण के लिए भारत के उत्पादन क्षमताओं को समर्थन किया।

इस क्षेत्र में अनुसंधान और विकास (R & D) के लिए भी दोनों देशों के बीच साझेदारी मजबूत हुई है। Covid-19 के दौरान दोनों देशों के वैज्ञानिकों ने चिकित्सीय उपाय, जीनोम सीक्वेंसिंग और नई वैक्सीन तकनीकों पर मिलकर किया। यह सहयोग ने केवल महामारी का प्रभाव कम करने में सहायक रहा, बल्कि भविष्य में संभावित महामारियों से निपटने के लिए भी आधारभूत संरचना तैयार की गई।

भारत और अमेरिका के बीच वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग का यह मॉडल न केवल दोनों देशों के लिए फायदेमंद है, बल्कि वैश्विक सतर पर भी इसके सकारात्मक परिणाम है। अंतरिक्ष विज्ञान और स्वास्थ्य क्षेत्र में इस प्रकार की साझेदारी से न केवल तकनीकी नवाचार बढ़ेगा, बल्कि वैश्विक चुनौतियों, जैसे–जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य आपातकाल का समाधान भी संभव होगा। जिससे दोनों देश एक विकसित एवं सफल सहयोग का अटूट साझेदार बन सकेंगे।

शैक्षणिक और सांस्कृतिक संबंध :

भारत और अमेरिका के बीच शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध काफी मजबूत है, और यह समय के साथ विकसित होते जा रहे हैं। अमेंरिकी में भारतीय छात्रों की संख्या सबसे अधिक है। वे विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और बिजनेस जैसे क्षेत्रों में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। 2023–2024 में लगभग 2 लाख भारतीय छात्र अमेरिका में पढ़ रहे थे। कुछ अमेरिकी छात्र भारत में संस्कृति, योग, आयुर्वेद, और दक्षिण एशियाई अध्ययन के लिए आते हैं। दोनों देशों के विश्वविद्यालयों के बीच साझेदारी बढ़ रही है, जैसे संयुक्त शोध–परियोजनाएँ और फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम आदि।

अमेरिका में लगभग 4.5 मिलियन भारतीय प्रवासी रहते हैं, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम करते हैं। भारतीय–अमेरिकन समुदाय टेक्नोलॉजी, शिक्षा राजनीति और कला जैसे क्षेत्रों में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। सिलिकॉन वैली में भारतीय प्रवासियों का विशेष प्रभाव है। भारतीय संगीत, बॉलीवुड फिल्में और त्योहार (जैसे दिवाली और होली) अमेरिका में काफी लोकप्रिय है। दोनों देशों के सांस्कृतिक संगठनों (जैसे भारतीय सांस्कृतिक संघ) के जरिए सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किये जाते हैं, जो कि दोनों देशों के सम्बन्ध को प्रगाढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विवाद के क्षेत्र

रणनीतिक मतभेद : भारत और अमेरिका के बीच कई स्तरों पर असहमती है, जैसे भारत रूस से रक्षा पकरणों की खरीद जैसे S-400 मिसाइल प्रणाली पर जोर देता है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका इसे CAATSA (Countering America's Adversaries throug Sanctions Act) के तहत प्रतिबंध का विषय बनाता है। भारत सीमा विवादों और CAC पर चीनी आक्रामकता से चिंतित है। यहाँ अमेरिका खुले तौर पर चीन के विस्तारवादी कदमों रखने का प्रयास करता है। लेकिन पाकिस्तान के मामले पर दोनों देश के दृष्टिकोण अलग–अलग है। अमेरिका ने ऐतिहासिक रूप से पाकिस्तान को सैन्य और आर्थिक सहायता प्रदान की है, जिसे भारत आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के हितों के खिलाफ मानता है। अमेरिका का "तालिका–पाकिस्तान" नीति पर जो जोर दिया उसने भारत के सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा दिया।

व्यापार और नीतिगत मुद्दे : वर्तमान का समय 'व्यापार युग' का है जिसमें विश्व के प्रत्येक देश अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं जिसके कारण कई बार व्यापार नीति को लेकर विवाद उत्पन्न हो जाता है। यही स्थिति पिछले कुछ समय से भारत–अमेरिका सम्बन्धों में देखने को मिली है। जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका ने GSP (Generalized System of Preference) को समाप्त किया वैसे ही भारत ने प्रत्युत्तर में अमेरिकी उत्पादों (बादाम और अखरोट) पर टैरिफ बढ़ा दिया।

अमेरिकी वीज़ा नीति और भारतीय आइटी क्षेत्र के सम्बन्ध में भी दोनों देशों के बीच कई पर समस्याएं उत्पन्न हो गई है। क्योंकि H1-B वीज़ा के कड़े नियमों से भारतीय आइटी कम्पनियों को भारी नुकसान हुआ है जबकि भारतीय कम्पनियों को "मेक इन अमेरिका" नीतियों के तहत अमेरिकी स्थानीयता पर निर्भर रहना पड़ता है।

पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन : भारत और अमेरिका दोनों जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन उनकी प्राथमिकताएँ और दृष्टिकोण भिन्न है। अमेरिका का जोर कार्बन उत्सर्जन को तुरंत कम करने पर है, जबकि भारत विकासशील देश होने के नाते "जलवायु न्याय" की बात करता है, जिससे विकासशील देशों को अपनी विकास सम्बन्धी जरूरतें पूरी करने का समय और संसाधन मिल सके।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

दोनों देश "US–India Climate and Clean Energy Agenda 2030 Partnership" के तहत स्वच्छ ऊर्जा तकनीकी नवाचारों पर काम कर रहे हैं। अमेरिका ने भारत की International Solar Alliance पहल का समर्थन किया है। भारत का जोर विकासशील देशों के लिए वित्तीय और तकनीकी सहयोग पर है, जबकि अमेरिका विकसित देशों की जिम्मेदारी को लेकर सहमत है। भारत– अमेरिका सम्बन्ध इन मुद्दों पर मतभेद होने के बावजूद प्रगतिशील और सहयोगात्मक है, क्योंकि दोनों देशों के व्यापक रणनीतिक हित एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए है।

मानवाधिकार और लोकतांत्रिक मुद्दे : अमेरिका ने जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद भारत की इस नीति को "आंतरिक मामला" कहा है, लेकिन समय–समय पर कश्मीर में मानवाधिकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़ी चिंताओं को उठाया है। भारत का स्पष्ट रुख है कि कश्मीर पूरी तरह से भारत का आंतरिक मामला है और इसमें बाहरी हस्तक्षेप की कोई आवश्यकता नहीं है।

अमेरिका की USCIRF (United States Commission on International Religious Freedom) ने भारत में धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा और भेदभाव को लेकर कई बार चिंता जताई है। भारत ने इस रिपोर्ट को खारिज करते हुए पक्षपातपूर्ण बताया है और कहा है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक देश है। अमेरिका और भारत के बीच इस मुद्दे पर मतभेद के बावजूद, दोनों देश संवाद और सहयोग के जरिए इन चिन्ताओं को हल करने की कोशिश करते हैं।

रूस–यूक्रेन युद्ध के सन्दर्भ में भारत की तटस्थता और अमेरिकी रुख : भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों में हाल के वर्षों में कई महत्वपूर्ण घटनाओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। जैसे रूस–युक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने तटस्थ रुख अपनाया, जो उसकी स्वतंत्र विदेश नीति का प्रतीक है। भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में रूस के खिलाफ प्रस्तावों पर मतदान करने से परहेज किया है और दोनों पक्षों के बीच संवाद और कूटनीति के माध्यम से समाधान की वकालत की है। अमेरिका ने भारत के इस रुख पर मिश्रित प्रतिक्रियाएँ दी है, हालांकि, दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी पर इसका सीमित प्रभाव पड़ा।

निष्कर्ष

शीत युद्ध के बाद भारत–अमेरिका सम्बन्धों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा है, जो सहयोग और विवाद के विभिन्न क्षेत्रों में परिलक्षित होता है। 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण ने दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को प्रगाढ़ किया। तकनीकी और रक्षा क्षेत्र में सहयोग, जैसे सिविल न्यूक्लियर डील और QUAD की भागेदारी, ने भारत और अमेरिका को एक रणनीति साझेदारी के रूप में उभरा। व्यापार शिक्षा, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में भी दोनों देशों के सम्बन्ध मजबूत हुए है।

हालांकि, कुछ विवादास्पद मुद्दे सम्बन्धों में बाधा जानते हैं। रूस और चीन के साथ भारत के सम्बन्ध, पाकिस्तान पर अमेरिका का दृष्टिकोण और व्यापार नीतियों को लेकर मतभेद द्विपक्षीय सम्बन्धों को जटिल बनाते हैं। इसके अलावा मानवाधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भी दोनों देशों के दृष्टिकोण अलग–अलग रहे हैं।

इसलिए निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारत–अमेरिका सम्बन्ध सहयोग और विवाद का संतुलित मिश्रण है। यह स्पष्ट है कि दोनों देश एक– दूसरे की आर्थिक और रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं के पूरक है। आने वाले समय में ग्रीन एनर्जी रक्षा उत्पादन और क्षेत्रीय स्थिरता में सहयोग के माध्यम से सम्बन्ध और प्रगाढ़ हो सकते हैं। इन मतभेदों को सुलझाने के लिए निरंतर संवाद और कूटनीति की आवश्यकता है, ताकि द्विपक्षीय सम्बन्धों की पूरी क्षमता का उपयोग किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. Pant, Harsh V.; India and the United State : A shred strategic vision (Carnegie Endowment, 2021)
2. Mohan, C. Rajan; Modi's World : Expanding India's sphere of Influence.
3. Jayshanker, Dr. S.; The India Way: Strategies for an uncertain world.
4. Menon, Shivshankar; Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy.
5. Mukherjee, Shantanu; How India sees the World.
6. Press Information bureau (PIB).
7. https://commerce.gov.in
8. https://www.dgft.gov.in
9. https://ustr.gov/
10. https://www.ISRO.gov.in
11. https://nisar.JPI.nasa.gov/
12. https://www.icmr.gov.in
13. https://www.makeinindia.com/pharmaceuticals